Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October-2018
Special Issue-66

Society, Culture and Environment

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi)
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist – Nashik [M.S.] INDIA

Executive Editors :
Dr. Satish Desai
Asso. Prof. Department of Sociology
Shikshanmaharshi Dr. Bapuji Salunkhe College,
Miraj, Dist-Sangli [M.S.] INDIA

53	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि सामाजिक परिवर्तन	आबासाहेब कसबे	250
54	साहित्य, समाज आणि संस्कृती यांचा अनुबंध	डॉ. एम.ए. कव्हळे	254
55	भारतीय समाज आणि सामाजिक समस्या	प्रा. आर. के खोकले	257
56	साहित्य आणि समाज	डॉ. सविता खोकले	263
57	वायू प्रदूषण : एक आव्हान	डॉ. दत्तात्रय खुणे	265
58	सत्यशोधक कथेतील समाजजीवन	पल्लवी कोडक	269
59	माळशिरस तालुक्यातील वीटभट्टी उद्योगाचे पर्यावरणीय परीक्षण	प्रा. डी. ए. कोकाटे	276
60	शिक्षण महर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे	डॉ. सौ मंजिरी कुलकर्णी	280
61	जागतिक तापमान वाढीचे शेती क्षेत्राममोरील आव्हान : एक पर्यावरणीय अभ्यास	डॉ. सी. बी. लोंढे	282
62	आदिवासी समुदायातील कला : एक संस्कृती	डॉ. महेश मगर	287
63	आदिम कोलाम समाज व संस्कृती	प्रा. सौ. श्यामला माने व डॉ. शैलजा माने	290
64	महिला पोलीस आणि सामाजिक परिवर्तन	प्रा. जी. टी. मोकासरे	295
65	आपत्ती व्यवस्थापनात स्वयंसेवक संस्थांची भूमिका	डॉ. माधव मोरे	298
66	भारतीय समाज आणि संस्कृती	प्रा. चांगदेव मुंढे	303
67	स्वयं सहाय्यता बचत गटांच्या मार्फत सामाजिक स्थित्यंतरण	प्रा. दत्तात्रय मुंढे	306
68	मानवी जीवन आणि पर्यावरणातील प्रदूषण	डॉ. जनार्दन परकाळे	310
69	पर्यावरण संरक्षण व शासकीय योजनांचा अभ्यास	प्रा. कलंदर पठाण	315
70	शिक्षण महर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे यांचे महाराष्ट्राच्या शैक्षणिक विकासातील योगदान	डॉ. सज्जन पवार	319
71	पर्यावरण संरक्षण व संवर्धनात नागरिकांची भूमिका	प्रा.अरुण पेंटावार व प्रा.आशा पोतलवाड	323
72	पर्यावरण आणि मराठी कविता	प्रा. रमेश रिंगणे	327
73	समाज प्रबोधनकार संत गाडगे बाबा	प्रा. दादा साठे	331
74	महादेव कोळी समाजातील स्त्री संस्कृती	डॉ. विकास शेवाळे	334
75	घिसाडी जमातीच्या कौंटुबिक व विवाह पद्धतीतील बदलते स्वरूप	डॉ. जयसिंग सिंगल	338
76	सामाजिक प्रश्न व पर्यावरण	प्रा. विनायक वनमोरे व प्रा. अशोक खोत	345
77	समाज व संस्कृती	सुरेखा व्हसमने	348

हिंदी विभाग

78	भारतीय समाज के साहित्य में वर्णित वरिष्ठ नागरिक	डॉ. राजेंद्र बगाटे	351
79	भारतीय संस्कृती : त्यौहार एवं प्रदूषण	डॉ. के. बी. गंगणे	355
80	ग्लोबल वार्मिंग : समस्या और समाधान	डॉ. बी. आर. नळे	358

या अंकाचे सर्व अधिकार प्रकाशकांनी स्वत:कडे राखून ठेवलेले आहेत. लेखांचे प्रकाशन वा पुनर्प्रकाशन अधिकार प्रकाशक आणि संबधित लेखाकाधीन समान असून शोध निबंधातील मते ही संबधित लेखाच्या लेखकाचे वैयक्तिक मते आहेत त्या मताशी संपादक व प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही.

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal | ISSN : 2348-7143
Impact Factor - (SJIF)-6.261(2017), (CIF) -3.452(2015), (GIF) -0.676 (2013) | October. 2018
UGC Approved Journal Special Issue 66-

भारतीय संस्कृति, त्यौहार एवं प्रदूषण

डॉ. के. बी.गंगणे
हिंदी विभाग प्रमुख,
सुंदरराव सोळंके महाविद्यालय,
माजलगांव जि.बीड - ४३११३१

भारतीय संस्कृति प्राकृतिक अनुराग एवं प्रकृति-संरक्षण की भावना से ओत-प्रोत रही है । इसमें प्रकृति-प्रेम इस तरह समाया एवं रचा बसा है कि प्रकृति से अलग अस्तित्व की हम कामना ही नहीं कर सकते। हमारे पुरातन ग्रंथ, वेदों में सूर्य, वर्षा, अग्नि एवं जल आदि सभी प्राकृतिक शक्तियों की स्तुति की गई है; क्योंकि वैदिक काल में लोक प्रकृति को दैवी - स्वरूप मानते थे । भारतीय मनीषियों ने कहा है, ''यथा देहे तथा पिण्डे'' अर्थात जिन तत्वों से सृष्टी की संरचना हुई है उन्हीं से हमारे शरीर का भी निर्माण हुआ है । ये तत्व हैं पृथ्वी, जल, अग्नि, गगन (अंतरिक्ष) एंव वायु । मानव नें प्रारंभ में यह अनुभव किया कि शरीर की रक्षा हेतु इन पांचो तत्वों की रक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं में प्रकृति संरक्षण एवं संवर्धन को अत्यधिक महत्व दिया है । पेड-पौधों, नदी-पर्वत, गृह- नक्षत्र, अग्नि - वायु सहित प्रकृति के साथ मानवीय रिश्ते जोडे गए हैं । पेड की तुलना संतान से की गई तो नदी को (गंगा मैया) मां स्वरूप माना।

दुनिया के सबसे प्रथम मंत्र अग्नि की स्तुति में रचा गया है । धर में तुलसी का पौधा लगाने का आग्रह भी हिन्दू संस्कृति में क्यों है ? यह आज सिध्द हो गया है । उमसें अधिक मात्रा में प्राणवायू अहक्सीजन होता है । हिन्दू संस्कृति में जितने भी त्योहार हैं, वे सब प्रकृती के अनुरूप हैं । मकर संक्रान्ति, वसंत पंचमी, होली, नवरात्र, गुडी पाडवा, वट पोर्णिमा, ओणम, दीपावली, कार्तिक पौर्णिमा, छठ पूजा, हरियाली तीज, गंगा दशहरा आदि सब पर्वो में प्रकृति संरक्षण के महत्व को प्रतिपादित किया है । फिर प्रश्न यह पडता है कि भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण का महत्व प्रतिपादित किया गया है तो पर्यावरण प्रदूषण की समस्याँए क्यों निर्माण हो गई । पेड-पौधों के महत्व को प्राचीन काल से स्वीकारा गया है । परन्तु हम धीरे - धीरे अपनी सुख - सुविधा के लिए उसे नष्ट करते जा रहे है । '' भौतिकवादी मानव आधुनिकता के नशे में पर्यावरण के भौतिक रूप के आकर्षण व महत्व की अनुभूति करने में अनिच्छुक रहा है । फलतः पर्यावरण का शोषण एवं विनाश हो रहा है ।''१

हमारा देश उत्सवों और त्यौहारों का देश है । यहां हर दिन कोई न कोई त्यौहार होता है । त्यौहार हममें नई उर्जा का संचार करने के साथ ही भाईचारे और स्नेह की भावना को बढाते हैं। हम भारतवासी बडे धार्मिक लोग है। लेकिन इन धार्मिक भावनाओं के कारण यदि हमारा वातावरण प्रदूषित होता हो तो यह धर्म नहीं है । क्योंकि सभी धर्मो में 'बहुजन हिताय' यानी सबके कल्याण की भावना होती है । आज कल त्यौहार मनाते समय पर्यावरण के प्रदूषण का ध्यान नहीं रखा जाता । हर जगह पटाखे की आवाज हेती हैं जिससे पशु, पक्षी और पालतू जानवर डरे हुए होते है । अगले दिन हम सभी दुर्धटनाओं के बारे में अखबारों में पढते है जो ज्यादातर उत्सव के दौरान पटाखों की वजह से होती है । यह हमारे लिए हानिकारक है और पुराने, बीमार लोगों, छोटे बच्चों, पशुओं और विशेष रूप से हमारे पर्यावरण के लिए हानिकारक है । अफसोस की बात है, त्यौहार हमारे वातावरण में एक बहुत बडा प्रदूषण का कारण है ।

दीवाली भारत में मनाया जानेवाले सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है । सभी आयु वर्ग के लोग पटाखे जलाते है और चोटों के बारे में भूल जाते है जो वे अपने स्वयं के स्वास्थ्य के साथ-साथ प्रकृति पर कर रहे हैं। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आकडों से पता चलता है कि दीवाली के दौरान वायु प्रदूषण का स्तर कम से कम ५० बढ जाता है । पटाखों में तांबा, कैडमियम, सल्फर, एल्युमीनियम बेरियम और दुसरे तरह के तत्व होते हैं । पटाखा बजते ही यह जहरीले रसायन निकलता है और हवा को दूषित करता है । कल्पना करा यह उन लोगों पर क्या असर करता है जो लंबे समय से अस्थमा और संबंधित रोगों से ग्रस्त हैं । सडके जले पटाखों और उपहार, मिठाई बक्सों के रैपिंग कवर से गन्दी रहती है । क्या पटाखे जलाना और बहुत शोर मचाना ही त्यौहारें का असली मुद्दा है ? " विश्व स्वास्थ संगठन के अनुसार भारत की राजधानी दिल्ली, विश्व के १० सबसे अधिक प्रदूषित शहरों में से एक है । सर्वेक्षण बताते है किं वायु प्रदूषण से देश में, प्रतिवर्ष होने वाली मौतों के औसत से, दिल्ली में १२ प्रतिषत अधिक मृत्यु होती है।"२ दिवाली के दौरान पटाखों एवं आतिशबाजी के कारण दिल के दौरे रक्तचाप, दमा, एलर्जी, बौंकाइटिस और निमोनिया जैसी स्वास्थ समस्याओं का खतरा बढ जाता है। दिवाली के दौरान आवाज का स्तर १५ डेसीबल बढ जाता है जिसके कारण श्रवण क्षमता प्रभावित होती है । "दिवाली खुशियाँ एवं रौशनी का त्यौहार है लेकिन दिवाली के दौरान छोडे जाने वाले तेज आवाज के पटाखे पर्यावरण पर कहर बरसाने के अलावा जन स्वास्थ के लिए खतरा पैदा कर सकते है"३

आज कल हम जाने - अनजाने धार्मिक क्रिया-कलापों के द्वारा पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहे हैं । पूजा-पाठ और विभिन्न धार्मिक कर्म कांडो के दौरान निकलने वाली फूल-मालाएं, यज्ञ की भस्म व अन्य सामग्रियों के द्वारा न चाह कर भी हम पर्यावरण कोण प्रदूषित कर रहे हैं। मूर्ति स्थापना वाले त्यौहारों, जैसे गणेश पूजा और दूर्गा पूजा के दौरान तो हम बडे पैमाने पर पर्यावरण की शूचिता को दरकिनार कर देते हैं। आधुनिक समय में धार्मिक कार्यक्रमों के दौरान प्लास्टिक का चलन बढता ही जा रहा है जो हमारे पर्यावरण के लिए नुकसानदायक है ।

झीलों, समुद्रों, नदियों आदि के प्रदूषित होने का एक कारण और भी है, इनमें प्रतिमाओं का विसर्जन, जो विभिन्न त्योहारों पर लाखों का संख्या में संपन्न होता है।"४ विसर्जन के बाद रंगों से निकले बायो-कार्बोनेट, तांबा, लेड, पारा, क्रोमियम, कैडमियन, गंधक, सोडियम, फास्फोरस, आदि तत्व जल में धुलकर पानी में धुली अहक्सीजन की मात्रा धटाने लगते हैं जिससे जलीय जीव मरने लगते है । "प्रतिमाओं को नदी, तालाबों, झीलों तथा अन्य जल स्त्रोतों में प्रवाहित किया जाता है तो उसका पानी प्रदूषित हो जाता है, जिससे जलीय जीवों का जीवन संकट में पड जाता है। यह एक तरह का नैतिक अपराध है, हमें उससे बचना ही होगा ।"५ हमे य नहीं भूलना चाहिऐ की जल स्त्रोतों का प्रदूषित करना नैतिक अपराध है। हमारे संस्कृति में नदियों को माँ के समान माना जाता है । नदियों एवं अन्य जलस्त्रोतों का प्रदूषण से बचाने का दायित्व हम सभी का ही है । धार्मिक कर्मकांडो, त्योहारों को इको-फ्रेंडली यानी प्रकृति मित्र तरीकों को अपनाया जाना चाहिए । जिसके तहत मूर्तियों को बनाते समय मिट्टी का ही प्रयोग करना चाहिऐ । कई स्थानों पर इसकी शुरूआत हो भी गई है लेकिन सभी में यह जागरूकता आनी चाहिए ताकि जनमानस में पर्यावरण संरक्षण की भावना का विकास किया जा सके। इन प्रमुख त्योंहारो के साथ-साथ अनेक छोटे-बडे त्योंहारों मे प्रदूषण बढता है । होली भी हर गली-मोहल्ले की अलग-अलग न जलाकर एक अनेक कहलोनियों को मिलकर एक सामुहिक होली जलाऐंगे तो इससे ईंधन भी बचेगा और पर्यावरण भी कम प्रदूषित होगा ।

सारतः कहा जा सकता है की भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण की परंपरा है परंतु समय के साथ उसे हम अनदेखा कर रहे हैं । त्योंहारों को गलत ढंग से मना रहे हैं । पर्यावरण रक्षा के लिए नियम भी बनाए

गए है परंतू इनका पालन नहीं किया जाता । पर्यावरण नियम का न्यायालय या पुलिस के डंडे के डर से नहीं बल्की दिल से सम्मान करना होगा । सच पूछिए तो पर्यावरण की सुरक्षा से बढकर आज कोई पूजा नहीं। प्रकृति ही ईश्वर है । भगवान की बनाई इस दुनिया की हवा, पानी, जल और जमीन को प्रदूषित होने से बचाए, वर्तमान संदर्भो में इससे बढकर कोई पूजा नही है यही भारतीय संस्कृति की उदात्तता है।

संदर्भ :

१. भारतीय साहित्य मे पर्यावरण संरक्षण - डह्.सुमन सिंह, पृष्ठ - ८०
२. http://site/pradushan10/10/2018
३. http: www.pradushan aur tyauhara-11/10/2018
४. जीवनदायिनी प्रकृति और इसका संरक्षण सुरेंन्द्र प्रसाद राय पृष्ठ क्र.१३४-१३५
५. https//www.scientificworld.in-7/10/2018

ISSN 2349-638x
Impact Factor 5.707

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

PEER REVIEW & INDEXED JOURNAL
Email id : aiirjpramod@gmail.com
www.aiirjournal.com

SPECIAL ISSUE No. 45

Executive Editor
Dr. S.M. Maner
Principal
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Co-Editor
Prof. V. H. Chavan
Dept. of Hindi
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Chief Editor
Prof. Pramod Tandale

62.	डॉ. रामकृष्ण बदने	प्रभा खेतान के आत्मकथा में व्यक्त नारी संवेदना	156
63.	संतोष अशोक निरगुडे	मार्कण्डेय के कहानियों में स्त्री चिंतन	158
64.	प्रा. मुजावर जैनु हमिद	रेहन पर रग्घू उपन्यास और वर्तमान	160
65.	डॉ. राजकुमार पंडितराव जाधव	हिन्दी साहित्य : दलित विमर्श एक चिंतन	162
66.	प्रा. विश्वनाथ चंद्रकांत पटेकर	इक्कीसवीं सदी की हिंदी आत्मकथा और दलित विमर्श	164
67.	डॉ. माधुरी सोनटक्के	उषा प्रियंवदा का उपन्यास 'भया कबीर उदास' में स्त्री विमर्श	166
68.	डॉ. आरिफ शौकत महात	भूमंडलीकरण और बदलते मानवीय मूल्य	169
69.	डॉ. काकासाहेब गंगणे डॉ. मंत्री रामधन आडे	21 वीं सदी का हिन्दी गद्य साहित्य और स्त्री विमर्श	171
70.	डॉ.एस.जे.पवार	'अपना मन उपवन' उपन्यास में व्यक्त पर्यावरण विमर्श	174
71.	डॉ.साहेबहुसैन जे. जहागीरदार	अल्पसंख्यक विमर्श को व्यक्त करता इक्कीसवीं सदी का उपन्यास 'अपवित्र आख्यान'	177
72.	प्रा. विवेकानंद हरिभाऊ चव्हाण	कब्र का मुनफा – 21 वीं शताब्दी का बाजारवाद	181

21 वीं सदी का हिन्दी गदय साहित्य और स्त्री विमर्श

शोध-निर्देशक
डॉ. काकासाहेब गंगणे
हिन्दी विभाग
सुंदरराव सोळंके महाविद्यालय, माजलगांव(महाराष्ट्र)

डॉ. मंत्री रामधन आडे
हिन्दी विभाग
तुलजाभवानी महाविद्यालय, तुलजापूर(महाराष्ट्र)

सामाजिक सरोकारों से लैस बुध्दिजीवियों और कार्यकर्ताओं के बीच हमेशा से यह लगातार चर्चा और चिन्ता का विषय रहा है कि हिन्दी में स्त्री प्रश्न पर गौतिक लेखन आज भी काफी कम मात्रा में मौजूद है। स्त्री विमर्श की सैध्दांतिक अवधारणों एवं साहित्य में प्रचलित स्त्री विमर्श की प्रस्थापनाओं की भिन्नता या एकांगीपन के संदर्भ में पहला प्रश्न यह उठता है कि हिन्दी साहित्य जगत में स्त्री विमर्श के मायने क्या है? वैदिक काल में नारी की स्थिति अत्यन्त उच्च थी। वाल्मिकी रामायण में लिखा है: यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता- जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता का वास होता है। वैश्वीकरण से आए तमाम बदलावों के बाद आज भी स्त्री अंधकार युग की बर्बरता के बीच जाने का अभिशप्त है । आये दिन नारियों पर अत्याचार बढता हुआ दिखाई देता है । पुरुष जीतना हिंसक होता जा रहा है, स्त्री उतनी ही उग्रता से प्रतिरोध करने लगी है।

भारतीय संस्कृति में नारी को समर्पणमयी, वात्सल्यमयी, माता और ममताप्रवीन बहन के रुप में चित्रित किया गया है। नारी त्याग की मूर्ति है। धरती माँ के रुप में, जननी-जन्मभूमी के रुप में आकाश की उँचाईयों से लेकर समुद्र की गहराइयों से अपार-संभावनाओं की शुभकानाएँ उसके लिए समेट कर ले आई। जहाँ नारी की पूजा होती है वही देवताओं का निवास होता है। भारतीय नारी की यह महानता रही है वह पति की उपेक्षा और प्रताडना पाकर भी उसके प्रति मन-वचन कर्म से समर्पित रहती है। कभी-कभी नारी का त्याग पती की दृष्टी को बदलने में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। ''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल मे है दुध, और आँखों में पानी'' स्त्री के मानसिक, दैहिक शोषण की भयानक स्थिति को रचनाकारोंने अभिहित किया है। आज वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने वीडिओ, इंटरनेट के जाल बिछाकर दृश्य-श्रव्य माध्यमों से हमे पूरी दुनियाँ से जोड दिया है। वही पर उपभोक्तावादी संस्कृति को भी बढावा दिया। मूल्यों और रिश्तो पर बाजार हावी हो गया। देश में जहाँ बदलाव का दौर पूरे वेग से आरंभ हो गया वही स्त्री-अस्मित और स्त्री स्वातन्त्र्य को लेकर गलत फहमियाँ भी चारों ओर दिखाई देती है। मीडियाने स्त्री को मंथ देने के नाम पर स्त्री के छवीका दुरुपयोग किया है। हिन्दी पत्रकारिता एवं साहित्य में स्त्री विमर्श को लेकर खूब बहस बाजियाँ हुई। स्त्री विमर्श एक निरन्तर गतिशील परिवर्तन की प्रक्रिया के रुप में दिखाई देती है। दुर्भाग्य से बहुसंख्या स्त्री-समाज तो आज भी उससे वंचित है। आज समय की बढती गति के साथ एक ओर जहाँ तेजी आयी है, वही दुनियाँ के सिमट जाने के कारण ही लगता है जैसे स्त्री विमर्श ने एक आन्दोलन का रुप ले लिया है। समाज में अनेक वर्ग और स्थितिओं के अनुसार स्त्री को प्रगति की अपनी सीढियाँ तय करे और आगे उन्नती करती रहे। ऐसी स्थिति में स्त्री विमर्श को एक विचारधारा के रुप में ही स्वीकार किया जा सकता है। भारत की सभ्यता और संस्कृति में नारी को देवी माना जाता है। वाल्मीकि ने रामायण में लिखा है। ''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता''[1]

यह सच है कि स्वातंत्र्य भारत के संविधान ने कई अधिकार स्त्रीयों के आँचल में डाल दिए है। यह सच है कि वह घर, परिवार, समाज में आज भी शोषण-मुक्त नही पाई है। ज्ञान के प्रसार के कारण स्वाधिकार स्वचेतना के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी, सामाजिक शोषण के खिलाफ आवाजे उडने लगी इसी आवाजों की गुंज सुनाई पड़ने लगी। ''जगदंबा देहरी दिवरा बार अइली है, जगतारण देहरी दिवरा बार अइली है।''[2] पहचान पर्व के उद्घाटन पर जलाया गया दीपक एवं उसकी ज्योत नारी शक्ति उजाले-युक्त पहचान का प्रतीक है। स्त्री-विमर्श को बृहत्तर अर्थो में परिभाषित करना चाहे तो वह घर-परिवार, समाज-नीति और राष्ट्रनीति में नारी की अस्मिता, अधिकार और उन अधिकारों के लिए संघर्ष चेतना से जूडे संवाद की संकल्पना है। फेमिनिज्म का प्रभाव हमारे साहित्य के उपर पडा हुआ दिखाई देता है। विशेषकर स्त्री रचनाकारों द्वारा लिखित साहित्यपर फेमिनिज्म का प्रभाव दिखाई देता है। किन्तु यह कहना भी सही नही होगा। स्त्री जीवन की कितनी बडी विडंबना है कि स्त्री उसके अनुभवों की बजाय पुरूष के अनुभवों की अभिव्यक्ति की मांग की जाती है। आज जब स्त्री मुक्ति के प्रसंग पर बहस होती है तब परंपरा के पक्ष हार यह कहकर भारतीय परंपरा में स्त्री स्वाधीनता और अधिकार की पक्षधरता की बाते करते है। स्त्री की यातना सिर्फ उसकी नीजि यातना नही रहती वह सर्वहारा की यातना में तब्दील हो जाती है। ''अधिकत्तर स्त्रियाँ अपनी अस्मिता की तलाश दुसरी स्त्री में करती है और एक स्त्री दुसरी स्त्री के प्रति लगाव का अनुभव बडी तेजी से करती है।''[3]

स्त्री शक्तिहीन कैसे हो सकती है। उसी के कोख से महात्मा गौतम बुध्द, ईसा मसीहा, पैगम्बर मोहम्मद साहब, गुरुनानक देव, महाराणा प्रताप, कार्ल मार्क्स, महात्मा गांधी, दयानंद सरस्वती, जैसे महापुरूष पैदा हुए। यह स्त्री को सहनशीलता व धैर्य की शक्ति है। स्त्री-समाज में आज दोहरी मार झेल रही है। एक और स्त्री होने का अभिशाप दुसरी ओर भयंकर गरीबी

की मार उसका सारा संघर्ष अपने अस्तित्व के लिए है। भारत देश में फैले स्त्री समाज की जितनी परतें और जितनी प्रकार है उन्हें किसी समाज में सामान्य गज में नापा जा सकता है। केवल विमर्श शब्द के प्रचलित होने के बाद स्त्री विमर्श के नाम से स्त्री की समस्याओं और उसके अधिकारों की चर्चा तो होने लगी पर इसके बावजूद स्त्रियों के सामूहिक संगठित रूप का कोई अहसास तो आज भी नहीं हो सका जो किसी भी आन्दोलन के लिए जरूरी है। जॉन स्टुअर्ट मिल ने कहा था "एक सावधानी बरतते हुए हम यह मान सकते है कि जो ज्ञान पुरुष स्त्रियों से उसके बारे में हासिल करते हैं, भले ही वह उनकी संचित संभावनाओं के बारे में न होकर, सिर्फ उनके भूत और वर्तमान के बारे में ही क्यों न हो, तब तक अधुरा और उथला रहेगा, जब तक कि स्त्रियाँ स्वयं वह सब कुछ नहीं बता देती जो उसके पास बताने के लिए है।"[4] किसी भी देश की जैसी अर्थव्यवस्था होती है उस देश में वर्गगत आधार का स्वरुप भी वैसा होता है स्त्रीयों के आचार विचार रहन-सहन में अन्तर है। स्त्री संघर्ष करते करते या तो समर्पण कर लेती है, या विक्षिप्त अवस्था में पहुँच जाती है या विद्रोह करके रह जाती है। स्त्री परिवार एवं समाज में आर्थिक दृष्टि से पराधीन रही है। स्त्री की आर्थिक पराधीनता उसकी यातना, उपेक्षा और विवशता का बहुत बडा कारण है। स्त्री के विविध रुपों में वर्गीकरण अके आधारों में परिवर्तन का महत्त्वपूर्ण कारण है। स्त्री के व्यक्तित्व के विकास आधारों में परिवर्तन जिसके पिछे-पिछे सामाजिक परिस्थितियों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। स्त्री के रुपो के विकास में बढोत्तरी का कारण नारी का घर से बाहर आना सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्र में भाग लेना तथा उसका शिक्षित होना है। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल का मत है कि "नर और नारी देखने में दो लगते है किन्तु वे एक ही मुल तत्त्व को दो रुप है"[5] स्त्रियों की सामाजिक दशा में सुधार के लिए आर्थिक स्वतंत्रता सबसे अहंम भूमिका निभाती है। परिवार का ध्रुव स्त्री है। स्त्री के रूपों को सम्बन्धों के धरातल पर ही अधिक महत्ता मिली है। साने गुरुजी स्त्रियों की महत्ता के बारे में कहते है कि "स्त्री विश्व की महान शक्ति है। इस शक्ति से सबंध रखनेवाले पुरुष को शिव बनाना पड़ेगा शिव और शक्ती इनके प्रेम पर पूरे समाज की नींव खडी है।"[6]

फ्रायड ने स्त्री और पुरुष के अन्तमन जीवन का जो अध्ययन किया है वह दमित भावना से सम्बन्धित नये सिध्दांत प्रतिपादित किये जिससे मनस्थितीभावना, मता-दमित भावना, कुण्ठा आदि के उपर विशेष विचार अभिव्यक्त किया है। स्त्री के स्वभाव में अनेक तत्त्व दिखाई देते है। इसकी उन्नति उम्र वृध्दि के साथ समाज और परिस्थिति और सामाजिक चेतनाओं के द्वारा होता है। जिसके कारण स्त्री के स्वभाव में कोमलता, मृदुलता, स्नेहशीलता, ईर्ष्या, न्याय-अन्याय की न्यूनता नैतिकता-अनैतिकता, अहंभाव और हिनता तथा लज्जाशिलता गर्व, परिवार वात्समात्मक जीवन, उदात्तीकरण आदि भाव निर्माण एवं विकसित होते है। जैनेंद्र के शब्दों में "हमारे अन्दर अनन्त अव्यक्त है। मैल उसमें है, धौल-धवलता भी उसमें है उन सबको स्वीकार करके शनैः शनैः उसे बाहर निकालकर अपने को रिक्त करते जाना मेरे विचार में यह बडा काम है। इससे अलग सृजन क्या होगा यह मै जानता नहीं"[7] स्त्री समस्या कवल पारिवारिक समस्या या केवल स्त्री की समस्या व्यक्तिगत समस्या न मानकर सामाजिक और राष्ट्रीय समस्या मानी जाए। व्यक्तिगत समस्या में विश्व के विराट बाह्य-जीवनचक्र की समस्याओं को देखने की दृष्टि आज जाती है। स्त्री स्वभाव की एक प्रमुख प्रवृत्तियाँ है कि संकट समय हो आनंद या दुःख का समय हो, एवं जीवन के महत्त्व के क्षण का वह ईश्वर से श्रध्दा भक्ति और विश्वास रखती है। स्त्री के सहनशीलता के महान गुण शक्ति में भी अधिष्ठित है।

पुरुष प्रधान समाज में उनके साथ जो युगों-युगों से अन्याय होता आया है इसके कारण असंख्या बहनें काल कवलित होती रही है, परंतु जब भी बलिदान देने का अवसर आया तो वे कभी पीछे नहीं हटती। पतिव्रत धर्म का सारा बोध स्त्री पर ही है। त्यागपूर्ण सेवा करनेवाली स्त्री आदर्श भार्या कही जा सकती है। पत्नीव्रत का प्रचार होने तथा स्त्रियों के शिक्षित और दर्द से बाहर होने से अब स्त्री पति की जीवनसंगिनी बन गयी है। स्त्री-विमर्श घर परिवार, समाज-नीति और राष्ट्रनीति में स्त्री की अस्मिता, अधिकार और उन अधिकार के लिए संघर्ष चेतना से संवाद की संकल्पना है। भारत में साहसी आत्मचेतना स्त्रियों की कमी रही है। आज भी समाज में स्त्रीयाँ अनेक रूढी परंपरा में जखडी हुई दिखाई देती है। स्त्री-विमर्श की अवधारणा को यथार्थ का धरातल दिया। अफसोस कि आज आजादी मिलने के बाद हम नए सामंतवाद की गिरफ्त में आ गए है और स्त्री इसकी बराबर शिकार होती गई। स्वातंत्र्य भारत के संविधान ने कई अधिकार समाज में रहनेवाले लोगों को दिया है। किन्तु आज भी स्त्री शोषण मुक्त दिखाई नहीं देती है।

स्त्री-विमर्श की संकल्पना को कई पीढियों के रचनाकारोंने अनेक सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों में परखकर स्त्री की बदलती हुई छवि के नए आयाम दिया है। स्त्री के मानसिक, दैहिक शोषण की भयावह परिणतियों से चेताती विभिन्न वर्ग की स्त्रियों के अंतरंग में सेंध लगाती हुई इस निष्कर्ष तक पहुँचती है। पुरुष की मानसिकता में सेंध लगाकर अपनी ले-दे की नीति को अपनाने का सुझाव देती है। आज स्त्री अंधकार युग की बर्बरता के बीच जीने को अभिशप्त है। साहित्यिकारोंने धार्मिक रूढी परंपरा से मुक्ति के लिए आवाहन किया है। स्त्री की शिक्षा उसकी आत्मनिर्भरता और स्वायत्तता से जुडी है। स्त्री की मुक्ति है उसकी शिक्षा है। देश में अधिक विविधता है स्त्री के विमर्श के बारे में सबकी अलग-अलग समस्याएँ है। गाँव में रहनेवाली स्त्री, विशिष्ट कसबों में रहनेवाली स्त्री उसकी समस्या अलग है। गाँव में रहनेवाली स्त्री को लगता है कि आज भी

उनका शोषण हो रहा है। अत्याचार सहते हुए वह समाज द्वारा फैली हुई परंपरागत संस्कारों में स्त्री बंधी हुई है। और शोषण को अपना कर्तव्य मानकर स्त्री अपनी जीवन व्यतित कर रही है। गाँव एवं शहर में रहनेवाली स्त्री की समस्या एक जैसी नहीं हो सकती? अपनी अलग समस्याएँ है। भारत में परिवर्तन की प्रक्रिया धीमी है। आजादी मिलने के उपरान्त अनेक बुराइयाँ है अनेक समस्याएँ दिखा देती है। जब स्त्री उनसे मुक्त होगी तभी पुरुष के वर्चस्व से मुक्त होगी और परिवार और समाज में उसे उचित स्थान मिलेगा। भारतीय परिपेक्ष्य में घर में स्त्रियों को महाराणी, राणी, और कई प्रिय संबोधितों किया जाता है लेकिन काम सारे नौकरानियों जैसे लिए जाते है। स्त्री का बड़ा असंतुलित चित्रण मिलता है। देवी की अलौकिक छवि का यथार्थ जगत में खोजे से भी शायद ही मिले। आधुनिक सभ्यता में स्त्री को केवल भोग्य बना कर रख दिया है। आज समाज में स्त्री को केवल चार दिवारों में तक समेट दिया। स्त्री की महत्त्वपूर्ण तीसरी भूमिका है ''माँ'' बनने की। नारी का रुप ही बुध्दि, धातृ, प्रकृति, सृष्टि, स्मृति, दया, क्षमा, क्रांति और लक्ष्मी रुप में है। स्त्री को गुण संपन्न एवं सदाचार की साक्षात देवी मानकर पूजा की जाती है। किसी न किसी रुप में स्त्री को समानता के अधिकार से वंचित रखा जाता है। जो स्त्री पर अन्याय के बराबर है। यह अन्याय समाज के लिए शर्मनाक है। जब तक नारी के उत्पीडन को लेकर स्त्री जाति की समस्या मानकर हम आँख मँद बैठे रहेंगे, तब तक पितृसत्तात्मक व्यवस्था को भी सुचारु रुप से चलाने में जन्म दायिनी व विश्वपालन स्त्री की भूमिका की सार्थकता को पहचानना कठिण ही होगा।

निष्कर्ष रुप से कहा जा सकता है कि, आज स्त्रियाँ आपसी सहयोग, सद्भाव, कर्तव्यनिष्ठ, सृजनात्मकता जैसे मानवी मूल्यों का धारण करके एकदुसरे के कंधे से कंधा मिलाकर स्त्री के नए रूप परिभाषित कर रही है। जो राष्ट्र हेतू एक सुखद संकेत है। आजादी के दौरान स्त्री चेतना का एक अलग किस्म का भव्य रुप हमारे सामने आता है। हमारे इतिहास साहसी स्त्रियों के बलिदान से भरा पडा है। स्त्री विमर्श की अवधारणा को यथार्थ के धरातल दिया पर आजादी मिलने के बाद हम नए सामंतवाद की गिरफ्त में आ गए और स्त्री बराबर इसका शिकार होती गई। आज का वैश्वीकरण की प्रक्रियों में इंटरनेट जाल बिछाकर दृश्य श्राव्य के माध्यमों से दुनियाँ से जोड दिया। देश में बदलाव कर दौर आरंभ हो गया है। स्त्री विमर्श का नया स्वरुप स्त्रीयों के उपर हो रहे अत्याचार जैसे अमानवीय घटनाओं के विरोध में जन्म ले रहा है। समाज में स्त्रियों की भूमिका और उसके मूल्यांकन का विवेचन कर रही है। स्त्री विमर्श को एक निरन्तर गतिशील परिवर्तन की प्रक्रिया के रुप में दिखाई देती है। हमारे यहाँ परिवर्तन की गति धीमी हो गई है। स्त्रियों का एक वर्ग प्रगति के शिखर पर पहुँच गया है। लगभग चालीस वर्षों से स्त्रीने स्वयं को मुक्त कर लिया है। रूढी संस्कारों से ग्रस्त वही सामन्ती पति विराजमान मिलेगा यदी पुरूष इन संस्कारों से मुक्त हो जाये जिसके चलते हर बात और हर क्षेत्र में वर्चस्व उसका, अधिकार उसको तो स्त्री को तो अपने आप मुक्ति मिल जायेगी।

संदर्भ:-

1. पत्रिका मासिक- आजकल- मई 2001, पृष्ट 35
2. स्त्री सशक्तिकरण के आयाम- डॉ. देवशर्मा, पृष्ट-332
3. पत्रिका मासिक- आलोचना- अक्टुबर दिसंम्बर 2009, पृष्ट- 97
4. पत्रिका मासिक अंक- आलोचना- अक्टुबर दिसंम्बर 2009, पृष्ट-90
5. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप डॉ. गणेश दास, पृष्ट-25
6. आठवें दशक की लेखिकाओं के उपन्यासों में व्यक्त स्त्री चरित्र डॉ. सविता चोखोबा कितं, पृष्ट-14
7. हिन्दी उपन्यासों में नारी की मनोवैज्ञानिक विश्लेषण डॉ. विमल सहस्त्रबुध्दे, पृष्ट-227
8. वेबसाईट/इंटरनेट / पत्रिका

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue -2- इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर
ISSN : 2348-7143
February-2019

उदय प्रकाश की कविता में वर्ग–संघर्ष

डॉ. के. बी. गंगणे
हिंदीविभागाध्यक्ष,
सुंदरराव सोळंके महाविद्यालय माजलगांव, जि. बीड

==========

हिंदी कविता में पिछले वर्षों में कुछ ऐसे रचनाकार आए हैं जिनकी रचनात्मक क्षमता पर भरोसा किया जा सकता है। ये कवि लगातार हिंदी कविता के परिदृश्य को व्यापक बना रहे हैं। इनमें से कई के स्वर में उनके अपने–अपने समाज का स्वर भी सुनायी देता है। कह सकते हैं कि ये कवि अपनी कविता का चेहरा बनाने के साथ–साथ अपने समय की हिंदी कविता का भी चेहरा बनाने की जद्दोजहद में लगे हैं। इन नये युग के कवियों में अनामिका, एकांत श्रीवास्तव, सविता सिंह, श्री. प्रकाश शुक्ला, अनिलकुमार सिंह, उदय प्रकाश, अनिल त्रिपाठी, कुमार अम्बुज, लीलाधर जगूडी आदि प्रसिद्ध है। इन कवियों में उदय प्रकाश का स्थान महत्त्वपूर्ण है। उदय प्रकाश कहानीकार, पत्रकार, सम्पादक, निबंधकार, अनुवादक, फिल्म लेखनकार, कवि आदि हैं। उदय प्रकाश ज्यादातर कहानीकार और कवि के रुप में चर्चित हैं।

उदय प्रकाश की कविता में सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक सांस्कृतिक युग चेतना का सशक्तचित्रण किया है।कवि ने अपने कविता में मध्यमवर्गीय समाज का दुःख, दर्द, पीड़ा, शोषण आदि का वास्तव चित्रण रेखांकित किया है।उदय प्रकाश सर्वहारा वर्ग के पक्षधर हैं। उन्होंने शोषितों के प्रति घृणा और शोषक के प्रति सहानुभूति व्यक्त की है। आम आदमी शोषणवादी व्यवस्था में रोजमर्रा की परेशानियों के कारण निराश हताश हो गया हैं। ऐसे निराश हताश व्यक्ति के मन में उदय प्रकाश की कविता आत्मविश्वास जगा कर उन्हें भविष्य के प्रति आस्थावान बनाती है। उन्हें अन्याय, अत्याचार, शोषण के विरोध में लड़ने के लिए प्रेरित करती है। प्रस्थापित व्यवस्था को नष्ट करने के लिए कांति का आवाहन भी करती हैं। सन् 2009 में हुए सभी देशों के लेखक सम्मेलन में उदयप्रकाश बीजभाषण में कहते हैं– ''लेखक सर्वाधिक असुरक्षित और मनुष्यों में से हर कहीं मृत्यु से डरावने दुःस्वप्न का साथी रहा हैं।''[1]

'बैरागी आया है गाँव ' कविता में कवि ने उजडे गाँव का चित्रण किया है। महाजन, चौधरी, नेता हकिम, पुलिस, मंत्री, ठाकुर, ब्राम्हण आदि की लंबी लाइन शोषण में निरंतर लगी हुई गाँवों को चुस रही है। पेट की आग, तनपूरा, चमीय, नाच–गाना सब करती है, वहाँ मथुरा, गो लोक, वदे–पुराण काम नहीं आते।पटवारी की चौखट, पटेल का हल और महाजन के तकादे–सच्ची व्यथा कथा कह देते हैं; भीतरी और बाहरीदुर्दशा कविता की आँख सदैव शोषण से मुक्ति की ललक और परिवर्तन के प्रति उत्कृट संघर्ष को अच्छी तरह भाँप लेती है। इसलिए छाती के भीतर गुस्से की आग और कुल्हाडी पर कसी मुट्ठियाँ कवि को साफ़–साफ़ नजर आती हैं। जैसे कवि कहता है–

'' बैरागी आया है गांव
पाप से लदी हुई धरती दरक रहीं हैं।
X XXXXXXX
जग रही है वर्ग–चेतना की /नयी ज्वालामुखी।
हर चट्टान के गर्भ में/गाने लगी है।
मुक्ति की चिड़ियाँ। ''[2]

उदय प्रकाश ने सर्वहारा वर्ग को प्रस्थापित व्यवस्था के विरोध में खड़ा किया है। उनके मन में आत्मविश्वास जगाकर शोषणवादी व्यवस्था नष्ट करने के लिए कांति का आव्हान किया है। ''उदय प्रकाश की कविता जनता की सामुहिक चेतना के उद्भव की कविता है। कवि वर्गीय चरित्र को अच्छी तरह जानता है। और शोषितों की पक्षधरता ग्रहण कर शोषण से मुक्ति का हिमायती है।''[3]

उदय प्रकाश की कविता में आम आदमी के दुःख, दर्द के साथ–साथ उसके अभावों एवं पीड़ाओं को चित्रित किया है। कवि कहता है कि विश्व के सभी पीड़ितों, शोषितों ने संगठित होकर शोषणवादी व्यवस्था को नष्ट करना चाहिए, लेकीन यह शोषक होने नहीं देते हैं। संगठन को नष्ट करने के लिए शोषक नये–नये षड़यत्र रचते हैं। ' हाल–चाल' कविता में कवि लिखते हैं–

" कब तक आखिर कब तक/ यूँ खोए–लुटे
थक रुआँ से रहोगे ?
ये अकेले का सफ़र नहीं है,
जीवनदास "[4]

औद्योगिक विकास के साथ–साथ बड़ी–बड़ी कंपनियों का निर्माण हो रहा है। भौतिक सुविधाएं निर्माण हो गई हैं। लेकिन शोषित, मजदूरों की संख्या बढ़ रही हैं। उनकी जमीन उद्योगपतियों ने खरीदी है। इसलिए वह मजदूर हो गए हैं। इन सभी मजदूरों, शोषितों, अल्पभूधारक, आदिवासियों की पीड़ाओं को कवि उदय प्रकाश ने 'एक लिखी जा रही कविता का पहला ड्राफ्ट' कविता में स्पष्ट किया है–

" पाँते में बैठे है आधी से भी अधिक सदी से
अपनी पगार और मजुरी माँगते
न भिखारी है न गिरहकट न साधू न बाजीगर
न मुझ में बाज / न भाँड न दरबारी " [5]

उदय प्रकाश जनवादी कवि हैं। उन पर मार्क्सवादी विचारों का प्रभाव रहा है। इसलिए कवि सर्वहारा वर्ग का पक्षधर है। उन्होंने सर्वहारा वर्ग को कांति करने का आह्वान किया हैं। शोषणवादी व्यवस्था में जिन–जिन लोगों का शोषण होता है, वे सभी उनकी कविता में आये हैं।" आम आदमी में केवल मजदूर और श्रमिक ही नहीं, किसान, क्लर्क, शिक्षक, मध्यवर्गीय, नारी तथा वे सभी व्यक्ति आते हैं , जो शोषण की प्रकिया में पिस रहे हैं।"[6]

कवि भविष्य के प्रति आशावादी है। उसे विश्वास हैं कि एक न एक दिन यह शोषणवादी व्यवस्था नष्ट हो जाएगी। सर्वहारा वर्ग सैंकडों के चुंगल से जरुर मुक्त होगा। वह सपना देखता है कि साधारणजन शोषण मुक्त व सुखी होगा। 'अजगर की नींद' कविता में यही आशावादी स्वर व्यक्त किया हैं–

" लेकिन दिन
फिरते जरुर है
जैसे मेरे फिरेंगे
एक दिन ।"[7]

यहाँ पर कवि भविष्य की मंगलमय सुबह की कामना की है, जिसमें वर्तमान की भयावह अभावग्रस्त परस्थिति नष्ट होकर एक बेहतर स्थिति का निर्माण होगा! इसी सर्वांगीण उन्नति और आदर्श के लिए उदय प्रकाश की कविता हमें सतत प्रयासरत दिखाई देती है।

निष्कर्ष: कहा जा सकता है की उदय प्रकाश की कविताओं में समाज के सर्वहारावर्ग के दुःख,पीड़ा, शोषण का यर्थाथ चित्रण आया है। वे सच्चे अर्थों में जनवादी कवि हैं। पूँजीपति व्यवस्था पर उन्होंने करारा व्यंग्यात्मक प्रहार किया है और उपेक्षित सर्वहारा वर्ग के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए उन्हें संगठित होकर संघर्ष करने की प्रेरणा दी है।

संदर्भ :

1. संपा. किशन कालजयी, सब लोग, अप्रैल 2009, पृष्ठ 43
2. उदय प्रकाश, अबूतर कबुतर, बैरागी आया है गाँव । पृष्ठ 110
3. डॉ. संतोष कुमार तिवारी, अज्ञेय से अरुण कमल, भाग–2 पृ. 212
4. उदय प्रकाश , सुनो कारीगर, हालचाल पृ.27
5. उदय प्रकाश, एक भाषा हुआ करती है, एक लिखी जा रही कविता का पहला ड्राफ्ट पृ. 13
6. संपा. प्रभाकर श्रोत्रिय, पूर्वग्रह, अंक– 125, अप्रेल–जून, 2009, पृ.50
7. उदय प्रकाश, अबूतर कबूतर, अजगर की नींद पृ. 46